International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(1): 101-104

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(1): 101-104
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-11-2017
Accepted: 21-12-2017

डॉ0 नीरज कुमार
अतिथि सहायक प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग, इन्दिरा प्रियदर्शनी राजकीय स्नातकोत्तर महिला,
वाणिज्य महाविद्यालय हल्द्वानी,
नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

Correspondence
डॉ0 नीरज कुमार
अतिथि सहायक प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग, इन्दिरा प्रियदर्शनी राजकीय स्नातकोत्तर महिला,
वाणिज्य महाविद्यालय हल्द्वानी,
नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

संस्कृतसाहित्य के बृहत्त्रयी महाकाव्यों में प्रतिबिम्बित शकुनशास्त्रीय सन्दर्भों का वर्णन

डॉ0 नीरज कुमार

प्रस्तावना

शकुनशास्त्र का मानव जीवन दर्शन में विशेष महत्व है। शकुनशास्त्र को ज्योतिष के संहिता स्कन्ध के एक अंग रूप में माना गया है, फिर भी वर्तमान में उसकी अत्यधिक प्रसिद्धि के कारण यह एक स्वतन्त्र शास्त्र बन चुका है। शकुन शब्द से सभी प्रकार के भावी शुभ एवं अशुभ सूचक संकेतों का बोध होता है। संस्कृत में 'शकुन' पक्षी विशेष को कहते हैं।[1] शब्दकल्पद्रुम के अनुसार– शक्नोतिशुभाशुभ विज्ञातुमनेनेति शकुनम् किसी कार्य के समय दिखलाई देने वाले लक्षण जो उस कार्य के संबंध में शुभ या अशुभ सूचना देते हैं।[2] शकुन शब्द की निष्पत्ति शक्+उनन् के योग से होती है।[3] स्पष्ट है कि शकुनशास्त्र उसे कहा जाता है, जिसमें शकुन सम्बन्धी विचारों के विश्लेषण दिये गये हों। विश्वकोश में शकुनं तु शुभाशंसा निर्मिते शकुनः पुमान् वर्णन मिलता है।[4] जो शुभ सूचक या अशुभ सूचक चिह्नों का ज्ञान कराते हो। अग्निपुराण में छः प्रकार के शकुनों का वर्णन मिलता है–

तिष्ठतो गतने प्रश्ने पुरुषस्य शुभाशुभम्। निवेदयन्ति शकुना देशस्य नगरस्य च।।
सर्वः पापफलो दीप्तो निर्दिष्टो देवचिन्तकैः। शान्तः शुभफलश्चैव देवज्ञैः समुदाहृतः।।
षट्प्रकारा विनिर्दिष्टा शकुनानाश्चदीप्तयः। वेलादिग्देशकररुतजातिविभेदतः।
पूर्वा–पूर्वा च विज्ञेया सा तेषां बलवत्तराः। दिवाचरो रात्रिचरस्थता रात्रौ दिवाचरः।।
क्रूरेषु दीप्ता विज्ञेया ऋक्षलग्नग्रहादिषु। धूमिता सा तु विज्ञेया यांगमिष्दति भाष्करः।।[5]

किरातार्जुनीयम् महाकाव्यः महाकाव्य के काव्यारंभ में पाशुपतास्त्रा प्राप्ति हेतु जाते समय शुभ शकुन जहाँ पांडवों के लिये शुभ सूचक है वहीं शत्रु विनाश का भी सूचक है। यहाँ काव्यारंभ में ब्रह्मचारी का दर्शन तृतीय सर्ग में वेदव्यास जी का दर्शन निश्चय ही पांडवों के लिए विजय सूचक है–

श्रियः कुरूणामधिपस्यपालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुडक्त वेदितुम्।
स वर्णिलिंगी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।।[6]

भद्रबाहुसंहिता में ब्रह्मचारी पुरूषों के दर्शन फल को निम्नलिखित शब्दों में प्रकाशित किया है–

सर्वेषां शकुनानां च प्रशस्तानां स्वरः शुभाः।
पूर्ण विजयमाख्याति प्रशस्तानांच दर्शनम्।।[7]

इसी प्रकार भद्रबाहुसंहिता में ब्रह्मचारी के पूजन को भी शुभकर मानते हुए ग्रन्थकार ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

दैवतं दीक्षितान् वृद्धान् पूजयेत् ब्रह्मचारिणः।
ततस्तेषा तपोभिश्च पापं राज्ञाप्रशाम्यति।।[8]

इस महाकाव्य के प्रथम सर्ग के प्रारम्भ में ब्रह्मचारियों के दर्शन को शुभ शकुनों के रूप में चर्चित किया गया है। अर्जुन के यात्रा काल में मेघ वृष्टि, दुन्दुभि शब्द, पश्चिम दिशा से गीत–वाद्य श्रवण, शरद ऋतु में धेनु, वृषभ दर्शन, निर्मल आकाश, राजहंश दर्शन सरोवरों में कमलों का दर्शन ये सभी यात्रा में सफलता व लक्ष्य प्राप्ति के सूचक हैं–

परीतमुक्षावजये जयश्रिया नदन्तमुच्चैः क्षतसिन्धुरोधसम्।
ददर्श पुष्टिं दधतं स शारदीं सविग्रहं दर्पमिवाधिपं गवाम्।।
विमुच्यमानैरपि तस्य मन्थरं गवां हिमानीविशदैः कदम्बकैः।
शरन्नदीनां पुलिनैः कुतुहलं गलद्दुकूलैर्जघनैरिवादधे।।[9]

भद्रबाहुसंहिता में भी यात्रा के लिए प्रवृत्त जन के समक्ष वृषभों और धेनुओं की उपस्थिति सफलता सूचक रूप में निर्दिष्ट है। बृहत्संहिता में भी धेनुदर्शन को शुभसूचक मानते हुए वराहमिहिर ने इस प्रकार लिखा है–

आगच्छन्त्यो वेश्म बम्भारवेण संसेवन्त्यो गोष्ठवृद्धयै गवां गाः।
आर्द्रांगयोवाह्रष्टरोम्ण्यः प्रह्रष्टा धन्या गावः स्युर्महिष्योऽपि चैवम्।।[10]

यात्रा काल में सम्मुख वायु प्रवाह के द्वारा कार्य की सफलता व देवाग्नाओं के मार्ग में प्रतिकूल वायु का वर्णन कवि ने बड़ी कुशलता से किया है। साथ ही शिव–अर्जुन के संग्राम के समय सूर्य मण्डल में परिवेश का होना तथा उल्कापात होना अपशकुन के रूप में वर्णित है–

पतत्सु शस्त्रेषु वितत्य रोदसी समन्ततस्तस्य धनुर्दुधूषतः।
सरोषमुल्केव पपात भीषणा बलेषु द्वष्टिर्विनिपातशंसिनी।।[11]

इसी प्रकार षोडश सर्ग में भी उल्कापात का वर्णन महाकवि भारवि ने प्रस्तुत किया है–

प्रतप्तचामीकरभसुरेण दिशः प्रकाशेन पिशंगयन्त्यः।
निश्चक्रमुः प्राणहरेक्षणानां ज्वाला महोल्का इव लोचनेभ्यः।।[12]

उल्काओं के विषय में विस्तार से चर्चा भद्रबाहुसंहिता में किया गया है। वहाँ उल्कापात विचार को निम्नलिखित रूप में निखदष्ट किया है–

भौतिकानां शरीराणां स्वर्गात् प्रच्यवतामिह।
सम्भवश्चान्तरिक्षे तु तज्ज्ञैरुल्केति संज्ञिता।।
तत्र तारा तथा धिष्ण्यं विद्युच्चाशनिभिः सह
उल्का विकारा बोद्धव्या निपतन्ति निमित्ततः।।[13]

इसी प्रकार काव्यस्रष्टा ने कथा नायक वर्णन प्रसंग में कार्य सिद्धि हेतु शुभ–शकुन प्रतिकूल नायकों के पक्ष में अपशकुन का वर्णन कर अपनी प्रतिभा से कुशल शकुनशास्त्रज्ञता का परिचय दिया है।

शिशुपालवध महाकाव्यः काव्यारंभ में ही नारद जी के दर्शन (पुण्यात्मा व तपोनिधियों का दर्शन) को शुभ सूचक माना गया है। इस प्रकार के महापुरूषों का दर्शन भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों कालों के लिये शुभ सूचक है, जैसे–

विधाय तस्यापचितिं प्रसेदुषः प्रकाममप्रीयत यज्वनां प्रियः।
ग्रहीतमार्यान परिचर्यया मुहूर्महानुभावा हि नितान्तमर्थिनः।।[14]

प्रस्तुत पद्य में महाकवि माघ ने शकुन विद्या का आश्रय लेते हुए काव्य में पुण्य आत्माओं तथा तपोधनियों का दर्शन शुभ सूचक रूप में प्रस्तुत किया है। महापुरुषों के पुण्य दर्शन पूजन की चर्चा को भद्रबाहुसंहिता में निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है–

देवतान् पूजयेत् वृद्धान् लिंगिनो ब्राह्मणान् गुरुन्।
परिहारेण नृपती राज्यं मोदति सर्वतः।।[15]

भद्रबाहुसंहिता में निर्दिष्ट है कि श्रेष्ठ पूजनीय वृद्धजनों के पूजन से पाप का नाश होता है–

दैवतं दीक्षितान् वृद्धान पूजयेत् ब्रह्मचारिणः।
ततस्तेषां तपोभिश्च पापं राज्ञां प्रशाम्यति।।[16]

इसी प्रकार अग्रिम पद्य में शकुनशास्त्रीय सिद्धान्तों का अनुकरण करते हुए देवर्षि नारद के पुण्य दर्शन को महाकवि माघ ने श्रीकृष्ण की उक्ति रूप में प्रस्तुत किया है–

हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः।
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रियेऽपि योग्यताम्।।[17]

शकुनशास्त्रीय ग्रन्थों में भद्रपुरुषों का दर्शन शुभ सूचक रूप में वर्णित है। भद्रबाहुसंहिता में पुण्यदर्शन को निम्नलिखित शब्दों में प्रकाशित किया है–

सर्वेषां शकुनानांचप्रशस्तानां स्वरः शुभः।
पूर्णं विजयामाख्यातिप्रशस्तानांचदर्शनम्।।[18]

कवि ने जहाँ कथा नायक के पक्ष में शुभ शकुनों का वर्णन किया है वहीं शत्रुनायक के विनाश हेतु धूमकेतु का उदय अपशकुन के रूप में वर्णित किया है, जैसे–

ओमित्युक्तवतोऽथ शार्गिण इति व्याहृत्य वाचं नभ–
स्तस्मिन्नुत्पतिते पुरः सुरमुनाविन्दोः श्रियं बिभ्रति।
शत्रूणामनिशं विनाशपिशुनः क्रुद्धस्य चैद्यं प्रति
व्योम्नीव भ्रुकुटिच्छलेन वदने केतुश्चकारास्पदम्।।[19]

प्रस्तुत पद्य में भगवान श्रीकृष्ण की वक्र भृकुटि को महाकवि ने धूमकेतु के रूप में प्रस्तुत किया है। शकुनशास्त्रानुसार धूमकेतु का उदय[20] उपप्लव उत्प करने वाला माना है। इसी प्रकार भद्रबाहुसंहिता नामक ग्रन्थ में भी धूमकेतु के उदय प्रभाव कि चर्चा की है–

बृहस्पतिं यदा हन्याद् धूम्रकेतुरथार्चिभिः।
वेदविद्याविदो वृद्धान् नृपांस्तज्ज्ञांश्च हिंसति।।[21]

शुभ शकुनों का वर्णन करते हुए कहीं प्रशस्त स्वर (श्रीकृष्ण, बलराम, उद्धव की वाणी) का भी परिचय सुधी पाठकों को कराया है, कहीं शुभ वर्ण की वस्तु, कही कमल पुष्पों की चर्चा करने से यात्रा वर्णन प्रसंग पाठकों के लिये रूचिकर बन गया है। साथ ही यात्राकाल में सौभाग्यवती नायिकाओं का दर्शन यात्रा को अमंगल रहित बना दे रहा है, जैसे–

प्राणच्छिदां दैत्यपतेर्नखानामुपेयुषां भूषणतां क्षतेन।
प्रकाशकार्कश्यगुणौ दधानाः स्तनौ तरुण्यः परिवव्रुरेनम्।।
आकर्षतेवोर्ध्वमतिक्रशीयानत्युÂतत्वाकुचमण्डलेन।
ननाम मध्योऽतिगुरुत्वभाजा नितान्तमाक्रान्त इवाग्नानाम्।।
यां यां प्रियः प्रैक्षत कातराक्षी सा सा ह्रिया नम्रमुखी बभूव।
निःशंकमन्याः समसाहितेर्ष्यास्तत्रान्तरे जघ्नुरमुं कटाक्षैः।।[22]

प्रस्तुत पद्य में शकुनशास्त्रीय सिद्धान्तों का अनुसरण करते हुए महाकवि माघ ने श्रीकृष्ण की हस्तिनापुर यात्रा प्रस्थान में सौभाग्यवती देवियों की उपस्थिति शुभसूचक बताई है। पुनः शुभ शकुनों का वर्णन करते हुए पूर्ण चन्द्र का दर्शन, मधुर सगीत श्रवण, स्तुति गान, मृदग्ध्वनि ये सभी यात्रा को रमणीय बना रहे हैं, जैसे–

यियासतस्तस्य महीध्ररन्ध्रभिदापटीयान्पटहप्रणादः।
जलान्तराणीव महार्णवौघः शब्दान्तराण्यन्तरयांचकार।।[23]

शकुनशास्त्र में नगाड़ों की ध्वनि, मृदगदि वाद्ययन्त्रों की ध्वनि के श्रवण को शुभफल सूचक रूप में माना है–

भेरीशंखमृदगश्च प्रयाणे ये यथोचिताः।
निबध्यन्ते प्रयातानां विस्वरा वाहनाश्च ये।।[24]

साथ ही वनविहार, जलक्रीड़ा, मयूरदर्शन, मयूरस्वर, द्विजदर्शन, साधुपुरूष, दर्शनादि के द्वारा यात्रा को सुगम बना दिया है। जैसे–

द्रुतमध्वन्नुपरि पाणिवृत्तयः पणवा इवाश्वचरणक्षता भुवः।
ननृतुश्च वारिधरधीरवारणध्वनिहृष्टकूजितकलाः कलापिन।।[25]

प्रस्तुत पद्य में शकुनशास्त्र का अनुकरण करते हुए महाकवि ने मयूरादि द्वारा किये गये मधुर शब्द को यात्राा में शुभ फल सूचक माना है। बृहत्संहिता में मयूरादि के द्वारा की गई मधुर ध्वनि को निम्नलिखित रूप में प्रकाशित किया है–

कुक्कुटेभपिरिल्यश्च शिखिवंजुलछिक्कराः।
बलिनः सिंहनादश्च कूटपूरी च पर्वतः।।[26]

साथ ही प्रतिपक्षी राजाओं के शरीर का वस्त्र गिरना[27], राजकन्याओं के हाथ से कास्यपात्र पतन[28] तथा शत्रु युवतियों के नेत्रों से प्रवाहित होती अश्रुधार[29] शत्राु राजाओं के लिये विनाश हेतुक अपशकुन रूप में वर्णित है।

नैषधीयचरितम् महाकाव्यः संस्कृत साहित्य के बृहत्त्रयी महाकाव्यों में शकुनों का पर्याप्त उल्लेख मिलता है। उसमें भी महाकवि श्रीहर्ष द्वारा विरचित नैषधीयचरितम् महाकाव्य में यात्रादि प्रसंग व स्वप्नादि विषयक प्रसंगों में शकुन बहुधा रूप में मिलता है। महाकाव्य में कवि ने समय–समय पर स्वप्न विचार का भी यथोचित प्रयोग किया है। जैसा कि कवि ने पूर्व में नायक (नल को) स्वप्न में नायिका के दर्शन कराये बाद में यथार्थ रूप से नायक को नायिका की प्राप्ति हुई। इस घटना ने सिद्ध किया कि स्वप्न कभी व्यर्थ नहीं होते हैं–

न का निशि स्वप्नगतं ददर्श तं जगाद गोत्रास्खलिते च का न तम्।
तदात्मताध्यातधवा रते च का चकार वा न स्वमनोभवोद्भवम्।।
मनोरथेन स्वपतीकृतं नलं निशि क्व सा न स्वपति स्म पश्यति।
अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोति सुप्तिर्जनदर्शनाऽतिथिम्।।
निमीलितादक्षियुगाच्च निद्रया हृदोऽपिबाह्येन्द्रियमौनमुद्रितात्।
अदर्शिसंगोप्य कदाऽप्यवीक्षितो रहस्यमस्याः स महन्महीपतिः।।[30]

श्रीहर्ष कहते हैं कि स्वप्न में पूर्व नहीं देखे गये पदार्थ को भी पूर्वजन्म की भावना से मनुष्य को दिखला देता है। दमयन्ती भी राजा नल को स्वप्न में दिखती थी एवं बाद में नल दमयन्ती को पति के रूप में प्राप्त भी हुए। ज्योतिषशास्त्र में स्त्रियों के मन में उत्पन्न होने वाली पुरुष विशेष विषयक कामना के विशिष्ट प्रभाव को प्रकाशित किया है–

जात्यं मनोभवसुखं सुभगस्यसर्व माभासमात्रामितरस्य मनोवियोगात्।
चित्तेन भावयति दूरगतापि यं स्त्राी गर्भं बिभर्ति सदृशं पुरुषस्य तस्य।।[31]

इसी प्रकार कभी धूमकेतु दर्शन कभी धूम्रवर्णीय राहुदर्शन अपशकुन के रूप में प्रस्तुत किया है जिससे कथानायक का जीवन संघर्ष पूर्ण हो गया–

मुनिद्रुमः कोरकितः शितिद्युति र्वनेऽमुनाऽमन्यत सिंहिकासुतः।
तमिस्रपक्षत्रुटिकूटभक्षितं कलाकलापं किल वैधवं वमन्।।[32]

इसी प्रकार महाकाव्य में स्थान–स्थान पर वापि तट पर पिकादि गीतों की चर्चा, मयूरों का नृत्य[33], शीतलमन्द सुगन्ध पवन[34], कलहंस दर्शन[35], जलपूर्ण घट, फलों से पूर्ण आम्रवृक्ष[36], गजदर्शन, चन्द्रमण्डल का शुभ दर्शन, मन की प्रसन्नता, दक्षिण नेत्र, दक्षिण अंग स्पन्द, स्त्रियों का वाम अंग स्पन्द, कुलदेवता का स्मरण[37], पद्म, शंखादि पदार्थ का दर्शन, दर्पण देखना, लाजा गिरना, फल–फूलों का दर्शन, पद्म, शंखादि का दर्शन, शुभ शकुन के रूप में वर्णित हैं–

अजानती काऽपि विलोकनोत्सुका समीरधूताऽर्धमपि स्तनांशुकम्।
कुचेन तस्मै चलतेऽकरोत्पुरः पुरांगना मंगलकुम्भसम्भृतिम्।।
सखीं नलं दर्शयमानयांऽकतो जवादुदस्तस्य करस्य कंकणे।
विषज्य हारस्त्रुटितैरतार्कितैः कृतं कयाऽपि क्षणलाजमोक्षणम्।।
लसन्नखादर्शमुखाम्बुजस्मित प्रसूनवाणीमधुपाणिपल्लवम्।
यियासतस्तस्य नृपस्य जज्ञिरे प्रशस्तवस्तूनि तदेव यौवतम्।।[38]

वहीं कवि ने शत्रु राजाओं के वर्णन में अपशकुन का भी परिचय दिया है। इस प्रकार सुधी पाठकों को शुभाशुभ शकुनों का ज्ञान पूर्णरूप से हो सकता है।

संदर्भ

1. सं0 हि0 को0 पृ0 996
2. शब्दकल्पद्रुम पंचमका0 पृ0 2
3. सि0 कौमु0 त0पृ–618
4. विश्वकोश 15
5. अग्निपुराण 231/1–5
6. किरातार्जुनीयम् 1/1
7. भद्रबाहुसंहिता 13/102
8. भद्रबाहसंहिता 13/116
9. किरातार्जुनीयम् 4/11–12
10. बृहत्संहिता श्लो0–3
11. किरातार्जुनीयम् 14/49
12. किरातार्जुनीयम् 16/40
13. भद्रबाहुसंहिता पृ0–17
14. शिशुपालवधम् 1/17
15. भद्रबाहुसंहिता 13/181
16. भद्रबाहुसंहिता 13/116
17. शिशुपालवधम् 1/26
18. भद्रबाहुसंहिता 13/102
19. शिशुपालवधम् 1/75
20. मुहू0पारि0यात्राप्र0पृष्ट–298
21. भद्रबाहुसंहिता 21/29
22. शिशुपालवधम् 3/14, 15, 16
23. शिशुपालवधम् 3/24
24. भद्रबाहुसंहिता 13/119
25. शिशुपालवधम् 13/5
26. बृहत्संहिता शकुनअ0–20
27. शिशुपालवधम् 15/57
28. शिशुपालवधम् 15/81

29. शिशुपालवधम् 15/81,84
30. नैषधीयचरितम् 1/30,39,40
31. बृहत्संहिता सौभाग्य0अ0–1
32. नैषधीयचरितम् 1/96
33. नैषधीयचरितम् 1/102
34. नैषधीयचरितम् 1/106
35. नैषधीयचरितम् 1/117
36. नैषधीयचरितम् 2/66
37. नैषधीयचरितम् 10/69
38. नैषधीयचरितम् 15/74,76